सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर प्रभाव

शिव नंदन सिंह*
नीतू पटेल**
गौरव राव***

यह शोध पत्र विद्यार्थियों में सोशल मीडिया का उनके शैक्षिक निष्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित है। इसमें शोधार्थियों द्वारा यह ज्ञात करने की कोशिश की गई है कि सोशल मीडिया विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन को किस प्रकार से प्रभावित करता है। यह शोध अध्ययन वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि पर आधारित था। इसमें प्रतिदर्श के रूप में शोधार्थी द्वारा बरेली (उत्तर प्रदेश) के शहरी क्षेत्र में स्थित 10 विद्यालयों के सत्र 2022–2023 में कक्षा 11 तथा 12 के विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत 120 विद्यार्थियों को सोद्देश्य न्यादर्श प्रविधि के द्वारा चयनित किया गया था। आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिए स्व-निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया था तथा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सांख्यिकीय प्रविधि के रूप में प्रतिशतता का उपयोग किया गया। इस शोध अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि सोशल मीडिया के उपयोग से अधिकतर विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। फिर भी कुछ विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के उपयोग के प्रति सही जागरूकता न होने के कारण उनके शैक्षिक निष्पादन पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ रहा है।

कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी के दौरान एवं पश्चात विश्व स्तर पर शिक्षा व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। सोशल मीडिया के माध्यम से विद्यार्थियों का शिक्षण-अधिगम सुचारू रूप से चलता रहा। अतः इस आपातकालीन स्थिति में शिक्षण-अधिगम को सुचारू रूप से जारी रखने हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा अकादमिक गतिविधियों को पूरा करने के लिए वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर 2019–20 विकसित कर सभी हितधारकों, विद्यालयों एवं संस्थाओं के साथ साझा किया गया। इस कैलेंडर में सोशल मीडिया के लगभग 12 मंच, जैसे—व्हाट्सऐप, फेसबुक, ट्विटर, एडमोडो, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, ब्लॉगर, स्काइप, पिंटेरेस्ट, यू-ट्यूब तथा

* *शोधार्थी*, शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश 243006
** *शोधार्थी*, शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश 243006
*** *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश 243006

गूगल हैंगआउट आदि के बारे में जानकारी एवं उनके संभावित उपयोग के बारे में विस्तारपूर्वक बताया गया है। साथ ही, वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर 2021–22 में सोशल मीडिया के रूप में पीएम ई-विद्या, दीक्षा, ई-पाठशाला, एन.आर.ओ.ई.आर., प्रज्ञाता तथा स्वयं पोर्टल आदि पर विभिन्न रूपों में उपस्थित ई-अधिगम सामग्री के उपयोग से संबंधित पूर्ण जानकारी विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा शिक्षकों को प्रदान की गई है।

वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर 2019–20 में सुझाए गए सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म, जैसे— व्हाट्सऐप, फेसबुक, टेलीग्राम, इंस्टाग्राम आदि का उपयोग विद्यार्थी चित्र, ऑडियो, वीडियो व लिखित संदेश के रूप में अधिगम सामग्री को साझा करने अथवा सीखने हेतु कर सकते हैं। विद्यार्थियों के कक्षावार अथवा विषयवार समूह बनाकर विभिन्न विषयों से संबंधित जानकारी साझा करने के लिए शिक्षक टेलीग्राम, व्हाट्सऐप तथा फेसबुक आदि का उपयोग कर सकते हैं। टेलीग्राम पर एक लाख तक विद्यार्थियों को समूह में जोड़ा जा सकता है। फेसबुक तथा यू-ट्यूब का उपयोग शिक्षक विद्यार्थियों से तुल्यकालिक अथवा गैर-तुल्यकालिक रूप में जुड़कर विषयवार व्याख्यान उपलब्ध कर सकते हैं। गूगल हैंगआउट तथा एडमोडो का उपयोग विद्यार्थियों के समूह से जुड़कर सिर्फ़ तुल्यकालिक अर्थात लाइव व्याख्यान देने के लिए कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त ट्विटर का उपयोग विद्यार्थियों को रोचक गतिविधियों में व्यस्त रखने तथा विशिष्ट प्रकरणों पर अपनी अंतर्दृष्टि साझा करने के लिए प्रभावी शैक्षिक उपकरण के रूप में कर सकते हैं। साथ ही, शिक्षक प्रदत्त कार्य (एसाइनमेंट) तथा विभिन्न अधिगम सामग्री की लिंक को भी ट्वीट कर सकते हैं।

वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर 2021–22 के अनुलग्नक-1 में सुझाए गए सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म के रूप में पीएम ई-विद्या पोर्टल के प्रमुख घटक में 'वन क्लास वन चैनल' है। इसमें डी.टी.एच.के 12 चैनल राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के पाठ्यक्रम पर आधारित शैक्षिक सामग्री के प्रसारण हेतु ऐसे विद्यार्थियों के लिए समर्पित हैं, जिनके पास डिजिटल संसाधन नहीं हैं। दीक्षा पोर्टल भी इसी पोर्टल के अंतर्गत आने वाले 'एक राष्ट्र एक प्लेटफ़ॉर्म' का एक मंच है, जिस पर किताबों के क्यूआर कोड के साथ वीडियो, ऑडियो, चित्रात्मक उपन्यास तथा रोचक प्रश्नोत्तरी के रूप में पाठ्य सामग्री उपलब्ध की गई है। ई-पाठशाला तथा एन.आर.ओ.ई.आर. पर विद्यालयी पाठ्यचर्या के लिए बनाई गई डिजिटल सामग्री की एक विस्तृत शृंखला ऑडियो, वीडियो, ई-बुक तथा फ्लिप बुक के रूप में उपलब्ध है, जिन्हें विद्यार्थी मुफ्त में डाउनलोड कर सकते हैं और विषम परिस्थितियों में भी पढ़ाई कर सकते हैं। केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिक संस्थान (सी.आई.ई.टी.), रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा उपयुक्त संगीत ध्वनि प्रभाव एवं मीडिया जगत के अनुभवी कलाकारों की भागीदारी से उच्च गुणवत्ता वाले ऑडियो कार्यक्रम तैयार किए गए हैं। जिन्हें 226 *रेडियो स्टेशन*, *रेडियो पॉडकास्ट* तथा *जिओ सावन* के माध्यम से प्रसारित किया जाता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित *प्रज्ञाता* दिशानिर्देश, गुणवत्तापूर्ण ऑनलाइन शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए एक रोडमैप या संकेत प्रदान करता है, जो विद्यालय प्रमुखों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक तथा उपयोगी है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडरों में वर्णित सोशल मीडिया के मंच विद्यार्थियों को मोबाइल, लैपटॉप व अन्य डिजिटल संसाधनों के माध्यम से तुल्यकालिक व गैर-तुल्यकालिक संचार की सुविधा प्रदान करते हैं। तुल्यकालिक संचार के अंतर्गत विद्यार्थी व्यक्तिगत अथवा समूह में ऑडियो अथवा वीडियो कॉल करके तथा त्वरित संदेश सेवा ऐप का उपयोग करके अपने सहपाठियों, अभिभावकों तथा अध्यापकों से त्वरित संचार करते हैं। साथ ही, गूगल हैंगआउट, एडोमोडो, यू-ट्यूब आदि का उपयोग करके त्वरित लाइव व्याख्यान से जुड़कर अधिगम कर सकते हैं। विद्यार्थियों को विषय संबंधी कोई समस्या होती है, तो वे इन मंचों के माध्यम से लाइव रहकर एक-दूसरे को संदेश भेजकर उसका समाधान प्राप्त कर सकते हैं, जबकि गैर-तुल्यकालिक संचार के अंतर्गत यू-ट्यूब पर रिकॉर्डेड वीडियो अथवा अन्य गैर-तुल्यकालिक मंच पर किसी भी रूप में उपस्थित अधिगम सामग्री का उपयोग करते हैं। इसके अलावा विषय संबंधी कोई अन्य समस्या उत्पन्न होने पर ई-मेल संदेश या चैट के माध्यम से विद्यार्थी अपनी सुविधा के अनुसार प्रश्न पूछने के लिए संदेश भेज सकते हैं तथा अध्यापक अपनी सुविधानुसार समय मिलने पर विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर व समस्याओं के समाधान संदेश के माध्यम से भेज सकते हैं।

उपरोक्त विवरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया एक ऐसा मंच है, जो डिजिटल रूप में सरलता से उपलब्ध रहता है। इनका उपयोग करके विद्यार्थी अधिगम या किसी अन्य प्रकार की सामग्री को बनाने अथवा खोजने के साथ-साथ सामग्री साझा भी कर सकते हैं। यह सामग्री, जैसे— चित्र, ऑडियो, वीडियो या लिखित संदेश के रूप में हो सकती है क्योंकि वर्तमान में सोशल मीडिया पर होने वाली गतिविधियों में युवा वर्ग अधिक सक्रिय है। अतः वे इन डिजिटल माध्यमों का प्रयोग कर अपने ज्ञान एवं क्षमता का विकास कर सकते हैं।

अध्ययन का औचित्य

वर्तमान समय में सोशल मीडिया की लोकप्रियता युवाओं के बीच बढ़ती जा रही है। इसके माध्यम से दुनियाभर के लगभग सभी उम्र के लोग अपने मित्रों व परिवार के लोगों के साथ संचार करते हैं। विद्यार्थी वर्ग भी इससे अछूता नहीं रहा है। वे सोशल मीडिया के द्वारा ही अपने सहपाठियों, अध्यापकों, परिजनों आदि से संपर्क स्थापित करते हैं। विद्यार्थियों को जब किसी भी पाठ्यवस्तु या व्यक्तिगत समस्या से संबंधित किसी समस्या का समाधान पाना होता है, तो वह इन्हीं डिजिटल युक्तियों के माध्यम से अपने अध्यापकों, अभिभावकों व मित्रों से संवाद कर समस्या का निवारण करते हैं। सोशल मीडिया एक ऐसा डिजिटल मंच है जिस पर विविध विचारधारा, मानसिकता, रुचि व दृष्टिकोण वाले लोगों से मिलने व विचारों को साझा करने का अवसर मिलता है। सोशल मीडिया के डिजिटल मंच पर बहुत से ऐसे व्यक्तियों के समूह हैं, जो विद्यार्थी के मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में सहायता करते हैं।

शिक्षार्थियों के मानसिक स्तर व रुचि के अनुसार सोशल मीडिया पर विभिन्न विषयों से संबंधित अधिगम सामग्री उपलब्ध रहती है, जो चित्र, ऑडियो

अथवा वीडियो के रूप में होती है, जिसका उपयोग करके वह अपने अधिगम स्तर को बढ़ा सकते हैं। साथ ही, मनोरंजन हेतु सोशल मीडिया के फेसबुक, यू-ट्यूब आदि जैसे प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करते हैं, जिससे वे प्रायः मानसिक अवसाद के शिकार होने से बच जाते हैं। अतः यह कह सकते हैं कि सोशल मीडिया प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में वृद्धि कर उनके शैक्षिक निष्पादन को बढ़ाने का प्रयास करता है।

इन्हीं विविध पहलुओं पर कई शोध अध्ययन हुए हैं, जिनमें से कुछ शोध अध्ययन इस शोध कार्य की समस्या से संबंधित हैं, जिनमें शंकर और पुष्पा (2020) के द्वारा सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन पर प्रभाव की जाँच का अध्ययन किया गया। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि सोशल मीडिया तथा शैक्षणिक निष्पादन के बीच सकारात्मक सह-संबंध है अर्थात सोशल मीडिया के उपयोग से विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन में सकारात्मक रूप से वृद्धि होती है। कुमार (2020) द्वारा विद्यार्थियों में सोशल मीडिया का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पढ़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करने के लिए शोध अध्ययन किया गया। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकतर विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के उपयोग के प्रति सकारात्मक रुचि थी, जो सोशल मीडिया के कारण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक प्रभाव को दर्शाता है। इस शोध अध्ययन के आधार पर यह सुझाव भी दिया गया कि अध्यापक-प्रशिक्षकों व विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया को एक शिक्षण-अधिगम सामग्री के रूप में अधिगम को प्रभावी बनाने हेतु प्रयोग करना चाहिए।

डाइमरी (2020) ने 'इंपैक्ट ऑफ़ सोशल मीडिया ऑन स्टूडेंट्स— ए कंपेरेटिव स्टडी' नामक एक शोध अध्ययन किया। इसमें विद्यार्थियों के जीवन पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करने के साथ-साथ विद्यालयी विद्यार्थियों तथा विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि सोशल मीडिया विद्यार्थियों के जीवन पर सकारात्मक व नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित कर रहा था। ओगुगुओ और अन्य (2020) के द्वारा किए गए शोध अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग का उनके शैक्षिक निष्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करना था। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकतर विद्यार्थी नए दोस्त बनाने के लिए, प्रदत्त कार्यों तथा शैक्षिक सामग्री के स्रोतों को खोजने आदि के लिए सोशल मीडिया पर समय व्यतीत करते हैं। साथ ही, सोशल मीडिया के उपयोग व एकाउंटिंग के औसत शैक्षिक निष्पादन के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं था।

शर्मा और बहल (2022) द्वारा बहिर्मुखी तथा अंतर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर पड़ने वाले सोशल मीडिया के प्रभाव का विश्लेषण करने हेतु एक तुलनात्मक शोध अध्ययन किया गया। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अंतर्मुखी तथा बहिर्मुखी विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के उपयोग का उनके शैक्षिक निष्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर है। धीमन (2022) विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सोशल

मीडिया के उपयोग तथा शैक्षिक निष्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए शोध अध्ययन किया गया। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकांश उत्तरदाताओं के पास इंटरनेट सुविधा से युक्त मोबाइल फोन थे तथा उन्हें कई सोशल मीडिया साइट्स के बारे में जानकारी भी थी। ये विद्यार्थी सोशल मीडिया पर प्रतिदिन आधे घंटे से तीन घंटे का समय बिता रहे थे। सोशल मीडिया का उपयोग विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा था। यह अध्ययन विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग चैटिंग करने के बजाय पुस्तकालय में अपने शोध के अनुपूरक के रूप में उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने की अनुशंसा भी करता है।

सोबेह और अन्य (2022) ने यह शोध अध्ययन भारत में कोविड-19 के दौरान उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों में ई-लर्निंग के लिए सोशल मीडिया के उपयोग के प्रति दृष्टिकोण को ज्ञात करने के लिए किया गया था। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों का सोशल मीडिया के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण था। सेनगुप्ता और वैश (2023) ने शोध अध्ययन में उच्चतर शिक्षा में सोशल मीडिया के उपयोग का विश्लेषण किया। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि कोविड-19 के समय उच्च शिक्षा में सोशल मीडिया का सबसे अधिक प्रयोग शिक्षण-अधिगम, चर्चाएँ, जनसंपर्क तथा नेटवर्किंग के लिए किया गया था। उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया के रूप में उपयोग किए जाने वाले मंचों के रूप में व्हाट्सऐप, फेसबुक, लिंक्डइन, इंस्टाग्राम तथा ट्विटर प्रमुख थे।

उल्लेखित किए गए शोध अध्ययनों की समीक्षा करने से पता चलता है कि विश्वपटल पर कई देशों में सोशल मीडिया के विभिन्न पहलुओं से संबंधित कई शोध अध्ययन हुए हैं, लेकिन भारत में इस क्षेत्र में सीमित शोध अध्ययन हुए हैं। अतः उपरोक्त बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए शोधार्थियों ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर सोशल मीडिया के प्रभाव पर शोध अध्ययन करने का निर्णय लिया। साथ ही, उक्त सभी दृष्टिकोणों का ध्यान रखते हुए शोधार्थियों द्वारा यह ज्ञात करने का प्रयास किया कि विद्यार्थी सोशल मीडिया का उपयोग किस उद्देश्य के लिए कर रहे हैं? वे सोशल मीडिया पर कितना समय बिता रहे हैं? वे कौन-कौन से डिजिटल मंच का उपयोग कर रहे हैं? तथा इन मंचों का उनके शैक्षिक निष्पादन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

सोशल मीडिया— इस शोध अध्ययन में सोशल मीडिया से अभिप्राय ऐसे डिजिटल मंचों से है, जिसके द्वारा विद्यार्थी डिजिटल युक्तियों के माध्यम से आपस में तुल्यकालिक अथवा गैर तुल्यकालिक प्रकार से आभासी रूप में जुड़कर जानकारी प्राप्त करते हैं अथवा साझा करते हैं।

शैक्षिक निष्पादन— शैक्षिक निष्पादन से तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न विषयों में शैक्षिक कौशलों, शैक्षिक सामग्री एवं ज्ञान प्राप्त करने के लक्ष्यों की दिशा में की गई प्रगति के मूल्यांकन से है।

शोध का उद्देश्य

इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना था।

शोध विधि

इस शोध अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक थी, जिसमें शोध की सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया था।

प्रतिदर्श तथा प्रतिदर्शन विधि

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा प्रतिदर्श के रूप में बरेली (उत्तर प्रदेश) के शहरी क्षेत्र में स्थित 10 विद्यालयों से कक्षा 11 तथा 12 के विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत सत्र 2022–2023 के 120 विद्यार्थियों का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन प्रविधि से किया गया था।

शोध उपकरण

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव से संबंधित प्रदत्त संकलन करने के लिए स्व-निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया था। इस प्रश्नावली में 2 खंड थे, जिसके पहले खंड में विद्यार्थियों की सामान्य जानकारी पर आधारित प्रश्न थे, जबकि दूसरे भाग में 10 प्रश्न थे। इसमें पहले तीन प्रश्नों में यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया था कि विद्यार्थी सोशल मीडिया का उपयोग किस उद्देश्य से करते हैं, वह सोशल मीडिया पर कितना समय बिताते हैं तथा कौन-कौन से सोशल मीडिया मंचों का उपयोग करते हैं। इसी खंड के अन्य सात प्रश्न सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित थे। विद्यार्थियों को इन प्रश्नों के उत्तर इनके सम्मुख बने कॉलम में सकारात्मक, तटस्थ अथवा नकारात्मक में से किसी एक का चयन कर सही का निशान लगाना था। इन्हीं विकल्पों से विद्यार्थियों द्वारा चुने गए उत्तरों की संख्या के आधार पर प्रतिशतता के माध्यम से आँकड़ों का विश्लेषण किया गया था।

प्रदत्त की संकलन प्रक्रिया

इस शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु सर्वप्रथम शोधार्थी द्वारा संबंधित विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से अनुमति लेकर चयनित कक्षाओं के विद्यार्थियों से सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करके सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए प्रश्नावली के बारे में अवगत कराया गया। साथ ही, विद्यार्थियों को बताया गया कि इसमें आपके द्वारा दी जाने वाली जानकारी गोपनीय रखी जाएगी, जो केवल इस शोध अध्ययन हेतु ही उपयोग की जाएगी। शोधार्थियों द्वारा विद्यार्थियों द्वारा भरी गई प्रश्नावलियों को एकत्रित कर लिया गया तथा उनका विश्लेषण प्रतिशतता के माध्यम से किया गया।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं निर्वचन

इस शोध अध्ययन में शोधार्थियों द्वारा उद्देश्यवार उपयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि प्रतिशतता द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण किया गया, जिनका वर्णन इस प्रकार है—

उद्देश्य 1— विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

सोशल मीडिया का उपयोग करने के क्षेत्र

तालिका 1 का अध्ययन करने से निष्कर्ष निकलता है कि 68.3 प्रतिशत विद्यार्थी शैक्षिक प्रयोजनों, 17.5 प्रतिशत विद्यार्थी मनोरंजन के प्रयोजन से, 10.8 प्रतिशत विद्यार्थी सामाजिक प्रयोजन से तथा 3.3 प्रतिशत विद्यार्थी अन्य प्रयोजनों हेतु सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। इन आँकड़ों का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों का सबसे अधिक उपयोग विद्यार्थी

शैक्षिक प्रयोजनों अर्थात अपने अधिगम को बढ़ाने हेतु करते हैं, क्योंकि इनके माध्यम से विद्यार्थियों को नि:शुल्क या बहुत ही कम कीमत पर विविध प्रकार की सामग्री तुरंत उपलब्ध हो जाती है। इस सामग्री का उपयोग करके वह अपनी अधिगम प्रक्रिया को धन व समय की बचत करके आगे बढ़ा सकते हैं। अधिकतर विद्यार्थियों का सोशल मीडिया के मंचों का शैक्षिक प्रयोजनों हेतु उपयोग करने का कारण विद्यार्थियों का शहरी क्षेत्र से जुड़ा होना था, क्योकि इस शोध अध्ययन में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को ही शामिल किया गया है। सामान्यतः शहरी परिवेश में रहने वाले परिवारों का शैक्षिक स्तर उच्च होता है, जिसके कारण इनमें सोशल मीडिया पर उपलब्ध शैक्षिक संसाधनों के उचित उपयोग के प्रति जागरूकता का स्तर भी उच्च हो सकता है, जो विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के उचित उपयोग हेतु अभिप्रेरित करती है। कुछ विद्यार्थी इन मंचों का उपयोग मनोरंजन तथा सामाजिक उद्देश्यों आदि की पूर्ति के लिए करते हैं, जो कि अधिगम को अप्रत्यक्ष रूप से सकारात्मक रूप में प्रभावित करते हैं, क्योंकि मनोरंजन आदि से उनका मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है। जिसका अधिगम प्रक्रिया पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका 1— विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग करने के क्षेत्र

उपयोग के क्षेत्र	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
शैक्षिक	82	68.3%
मनोरंजन	21	17.5%
सामाजिक	13	10.8%
अन्य	4	3.3%

प्रतिदिन सोशल मीडिया पर बिताया गया समय

तालिका 2 (पृष्ठ संख्या 46) का अध्ययन करने से पता चलता है कि 26.7 प्रतिशत विद्यार्थी एक घंटे से कम, 37.5 प्रतिशत विद्यार्थी एक से तीन घंटे, 25.8 प्रतिशत विद्यार्थी तीन से पाँच घंटे तथा 10 प्रतिशत विद्यार्थी पाँच घंटे से अधिक समय तक प्रतिदिन सोशल मीडिया पर बिताते हैं। अतः इन आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी एक घंटे से तीन घंटे तक सोशल मीडिया पर बिताते हैं। विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया पर बिताया जाने वाला यह समय अधिगम सामग्री को खोजने, सीखने व साझा करने, अन्य व्यक्तियों अथवा समूहों से संवाद करने तथा मनोरंजन हेतु प्रयुक्त किया जाता है। कुछ विद्यार्थी ऐसे भी हैं, जो तीन से पाँच घंटे तथा पाँच घंटे से अधिक समय तक सोशल मीडिया पर बिताते हैं, यह उनके सीखने की प्रक्रिया को नकारात्मक रूप से भी प्रभावित कर सकता है, क्योंकि सोशल मीडिया पर आवश्यकता से अधिक बिताया गया समय विद्यार्थियों के मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उनकी अधिगम की प्रक्रिया को भी विचलित कर सकता है। विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया पर बिताए जाने वाले अधिक समय का कारण विद्यार्थियों के सामाजिक व आर्थिक स्तर का उच्च होना हो सकता है, क्योंकि इस शोध अध्ययन में शामिल किए गए विद्यार्थी शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले थे। इन विद्यार्थियों को विद्युत की समुचित आपूर्ति तथा परिवार की आर्थिक स्थिति उच्च होने से उन्हें डिजिटल संसाधन, जैसे— मोबाइल, लैपटॉप तथा इंटरनेट आदि आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं।

तालिका 2— विद्यार्थियों द्वारा प्रतिदिन सोशल मीडिया पर बिताई गई समयावधि

समयावधि	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1 घंटा से कम	32	26.7%
1 से 3 घंटे	45	37.5%
3 से 5 घंटे	31	25.8%
5 घंटे से अधिक	12	10%

विद्यार्थियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले सोशल मीडिया प्लेटफ़ार्म

तालिका 3 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 65.8 प्रतिशत विद्यार्थी यू-ट्यूब, 19.2 प्रतिशत विद्यार्थी फेसबुक, 8.3 प्रतिशत विद्यार्थी व्हाट्सऐप तथा 6.7 प्रतिशत विद्यार्थी अन्य सोशल मीडिया मंचों का उपयोग अपने दैनिक जीवन में स्वयं या अभिभावकों के मोबाइल के द्वारा कर रहे हैं। इन आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी यू-ट्यूब का उपयोग शैक्षिक तथा मनोरंजन के लिए करते हैं। यू-ट्यूब पर उपलब्ध अधिकतर सामग्री श्रव्य-दृश्य रूप में होती है, जो विद्यार्थियों को कठिन अवधारणाओं को सीखने में मदद करने के लिए वीडियो व्याख्यान, एनीमेशन वीडियो तथा 360 डिग्री वीडियो जैसे संसाधन उपलब्ध होते हैं। वहीं दूसरी ओर विद्यार्थियों द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले सोशल मीडिया मंच के रूप में फेसबुक है, जो विद्यार्थियों को पाठ्यवस्तु के साथ चित्र, ऑडियो, वीडियो तथा दस्तावेजों से संबंधित जानकारी साझा करने में सहायता करता है। फेसबुक का उपयोग करते समय विद्यार्थी अन्य उपयोगकर्ताओं को मित्र के रूप में जोड़कर उनसे संपर्क स्थापित करते हैं, इससे उनमें सामुदायिक रूप से सीखने की भावना विकसित होती है।

तालिका 3— विद्यार्थियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म

प्लेटफॉर्म	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
यू-ट्यूब	79	65.8%
फेसबुक	23	19.2%
व्हाट्सऐप	10	8.3%
अन्य	8	6.7%

कक्षा में पढ़ाई के दौरान पाठ्यवस्तु को प्रभावी रूप से समझने में सोशल मीडिया का प्रभाव

तालिका 4 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 83.3 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया के उपयोग से पाठ्यवस्तु को सकारात्मक रूप से समझने में मदद मिलती है, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थी इस संदर्भ में तटस्थ थे, जबकि 10 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना था कि इसका नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। अतः इन आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी कक्षा में पढ़ाई गई पाठ्यवस्तु को और अधिक प्रभावी रूप से सीखने व समझने हेतु ऑनलाइन सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। जब विद्यार्थी अध्यापक द्वारा पढ़ाई गई पाठ्यवस्तु को यू-ट्यूब चैनल (जैसे— राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के अधिकारिक या कोई अन्य शैक्षिक

तालिका 4— विद्यार्थियों द्वारा पढ़ाई के दौरान पाठ्यवस्तु को समझने में सोशल मीडिया का प्रभाव

उत्तर का आधार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
सकारात्मक	100	83.3%
तटस्थ	8	6.7%
नकारात्मक	12	10%

यू-ट्यूब चैनल) तथा फेसबुक जैसे— विभिन्न शैक्षिक संस्थानों द्वारा बने समूह आदि पर उपलब्ध वीडियो तथा एनीमेशन वीडियो के माध्यम से पढ़ते हैं, तो यह अध्ययन सामग्री विषयवस्तु को अधिक सरल व रुचिकर रूप से समझने में सहायता करती है। जबकि 10 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना था कि सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म का कक्षा में पढ़ाई गई पाठ्यवस्तु को समझने में नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि वह इनका उपयोग केवल मनोरंजन तथा अपने दोस्तों व अन्य व्यक्तियों से संवाद करने हेतु करते हैं, जिससे उनके समय का दुरुपयोग होता है। यदि वह इस समय का उपयोग किताबों या अध्यापक द्वारा पढ़ाए गए पाठ के अध्ययन हेतु करते हैं, तो पाठ्यवस्तु को अच्छे से समझ सकते हैं।

सोशल मीडिया के उपयोग की अधिगम हेतु अभिप्रेरणा

तालिका 5 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 80 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया का उपयोग उनके अधिगम को अभिप्रेरित करता है। साथ ही, 9.2 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया उन्हें अधिगम हेतु अभिप्रेरित करता है या नहीं, यह बताना कठिन है अर्थात वह इस कथन को लेकर तटस्थ थे। इसके अतिरिक्त 10.8 प्रतिशत विद्यार्थियों का यह मानना था कि सोशल मीडिया उनके अधिगम को अभिप्रेरित नहीं करता है। अतः इन आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी सोशल मीडिया से अधिगम करने हेतु अभिप्रेरित होते हैं, क्योंकि जब विद्यार्थियों को विविध प्रकार की अधिगम-सामग्री द्वारा सीखने को मिलता है, तो उनमें सीखने का अभिप्रेरणा स्तर उच्च हो जाता है। कुछ विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया के मंच उन्हें अधिगम हेतु अभिप्रेरित करने के स्थान पर अधिगम से विचलित करते हैं, क्योंकि ये विद्यार्थी शायद सोशल मीडिया का उपयोग केवल मनोरंजन हेतु करते हैं।

तालिका 5— विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के उपयोग की अधिगम हेतु अभिप्रेरणा

उत्तर का आधार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
सकारात्मक	96	80%
तटस्थ	11	9.2%
नकारात्मक	13	10.8%

सोशल मीडिया के उपयोग का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

तालिका 6 (पृष्ठ संख्या 48) का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 75 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया का उपयोग करने से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जबकि 15 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया के उपयोग से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वहीं 10 प्रतिशत विद्यार्थी इस संदर्भ में तटस्थ थे। अतः इन आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी सोशल मीडिया के माध्यम से पढ़ते हैं, तो उनके शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि ये मंच विद्यार्थियों हेतु उपलब्ध विषयवस्तु को रुचिकर व प्रभावपूर्ण रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिससे वे अधिगम हेतु अभिप्रेरित होते हैं। वहीं कुछ विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिसका कारण यह है कि उनके द्वारा इन मंचों का उचित रूप से उपयोग

नहीं किया जाता है। इस प्रकार ये विद्यार्थी अधिगम से विचलित हो जाते हैं।

तालिका 6— विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के उपयोग का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

उत्तर का आधार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
सकारात्मक	90	75%
तटस्थ	12	10%
नकारात्मक	18	15%

सोशल मीडिया के उपयोग का लेखन कौशल पर प्रभाव

तालिका 7 के अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 60 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया के उपयोग से उनके लेखन कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है तथा 10 प्रतिशत विद्यार्थी इस बात को लेकर तटस्थ थे। वहीं 30 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना था कि सोशल मीडिया के उपयोग से उनके लेखन कौशल पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः इन आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया का उपयोग करने से अधिकतर विद्यार्थियों के लेखन कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस सकारात्मक प्रभाव का कारण यह है कि जब वह सोशल मीडिया पर किस्से, कहानी, प्रसंग या कोई अन्य सामग्री लिखते हैं अथवा पढ़ते हैं, तो उनकी हिंदी व्याकरण, शब्दावली तथा प्रभावशीलता संबंधी कौशलों में सुधार होता है। लेकिन 30 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे भी थे, जिनका मानना था कि जब वह सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं, तो उनका लेखन कौशल अर्थात सुलेख खराब हो जाता है। और लेखन कौशल खराब होने के पीछे का कारण उन्होंने सोशल मीडिया के मंच पर लेख, टिप्पणी अथवा विचार आदि के लेखन हेतु लैपटॉप, मोबाइल व कंप्यूटर आदि जैसे डिजिटल उपकरणों का उपयोग बताया, जिससे हस्त लेखन के कौशल पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका 7— सोशल मीडिया के उपयोग से विद्यार्थियों के लेखन कौशल पर प्रभाव

उत्तर का आधार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
सकारात्मक	72	60%
तटस्थ	12	10%
नकारात्मक	36	30%

सोशल मीडिया के उपयोग का अधिगम को रुचिकर बनाने पर प्रभाव

तालिका 8 (पृष्ठ संख्या 49) के अध्ययन से ज्ञात होता है कि 80 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि सोशल मीडिया के द्वारा वह अधिगम को रुचिकर बनाते हैं। साथ ही 11.7 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना था कि सोशल मीडिया के उपयोग से उनकी अधिगम में रुचि उत्पन्न नहीं होती है, जबकि 8.3 प्रतिशत विद्यार्थी इस विषय में तटस्थ थे। अतः इन आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर कह सकते हैं कि अधिकतर विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग कर अधिगम को रुचिकर बनाया जाता है। एक ओर जहाँ परंपरागत अधिगम-शिक्षण व्यवस्था में अधिगम सामग्री को लिखित रूप में तथा व्याख्यान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, वहीं दूसरी ओर सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफ़ॉर्म पर अधिगम सामग्री ऑडियो,

वीडियो तथा चित्र के रूप में विविधता के साथ प्रस्तुत करने से विद्यार्थियों में सीखने की रुचि उत्पन्न होती है, जबकि कुछ विद्यार्थियों की सोशल मीडिया से अधिगम करने की रुचि नहीं होती है, क्योंकि जब वे सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों पर उपलब्ध रोचक सामग्री के संपर्क में आते हैं, तो उनके लिए सोशल मीडिया के मंच अधिगम के स्थान पर मनोरंजन का साधन मात्र बनकर रह जाते हैं।

तालिका 8— विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग से अधिगम को रुचिकर बनाना

उत्तर का आधार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
सकारात्मक	96	80%
तटस्थ	10	8.3%
नकारात्मक	14	11.7%

सोशल मीडिया के उपयोग का संप्रेषण कौशल के विकास पर प्रभाव

तालिका 9 का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया के उपयोग से 71.7 प्रतिशत विद्यार्थियों के संप्रेषण कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। इसके अतिरिक्त 12.5 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना था कि उनके संप्रेषण कौशल पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा, जबकि 15.8 प्रतिशत विद्यार्थी इस संदर्भ में तटस्थ थे। अतः इन आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी सोशल मीडिया का उपयोग करके अपने संप्रेषण कौशलों में सुधार कर अधिक प्रभावी संप्रेषण करना सीख रहे हैं। विद्यार्थी जब सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफ़ॉर्म, जैसे— यू-ट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम तथा ब्लॉगर आदि पर ऑडियो, वीडियो अथवा लिखित रूप में कोई सामग्री देखते या पढ़ते हैं तथा समूह अथवा व्यक्ति विशेष से संवाद करते हैं, तो उनके संप्रेषण कौशलों में सकारात्मक परिवर्तन होता है, क्योंकि वह अन्य व्यक्तियों से संवाद करके अथवा वीडियो आदि देखकर अपने शब्द भंडार में वृद्धि करते हैं।

तालिका 9— सोशल मीडिया के उपयोग का विद्यार्थियों के संप्रेषण कौशल पर प्रभाव

उत्तर का आधार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशतता
सकारात्मक	86	71.7%
तटस्थ	19	15.8%
नकारात्मक	15	12.5%

तालिका 10— सोशल मीडिया के उपयोग से विद्यार्थियों के उनके व्यवहार में परिवर्तन

उत्तर का आधार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
सकारात्मक	89	74.2%
तटस्थ	16	13.3%
नकारात्मक	15	12.5%

सोशल मीडिया के उपयोग का व्यवहार में परिवर्तन पर प्रभाव

तालिका 10 के अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 74.2 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया के उपयोग से उनके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है। इसके अतिरिक्त 12.5 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि उनके व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा, जबकि 13.3 प्रतिशत विद्यार्थी इस संबंध में तटस्थ थे। इन आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी सोशल मीडिया के द्वारा अपने व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन कर रहे हैं। व्यक्ति जब सोशल मीडिया के मंच के माध्यम से किसी दूसरे व्यक्ति या अन्य लोगों के व्यवहार को वीडियो, ऑडियो

या लिखित संदेश के रूप में देखता व पढ़ता है, तो वह अपने व्यवहार में उनके गुणों का समावेशन करने का प्रयास करता है। वहीं कुछ विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया के इन मंचों पर अन्य व्यक्तियों से संवाद करने तथा उनके विचारों को पढ़ने तथा वीडियो आदि देखने से उनके व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन से निष्कर्ष रूप में पाया गया कि विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। वह सोशल मीडिया पर शैक्षिक प्रयोजन हेतु प्रतिदिन लगभग तीन से पाँच घंटे यू-ट्यूब जैसे प्लेटफ़ॉर्म पर बिता रहे हैं। कुछ विद्यार्थी फेसबुक व व्हाट्सऐप, जैसे— ऐप का उपयोग शैक्षिक प्रयोजन व मनोरंजन आदि के लिए कर रहे हैं। सोशल मीडिया का उपयोग विद्यार्थियों में अधिगम को रुचिकर बनाने, अधिगम हेतु अभिप्रेरणा, संप्रेषण-कौशलों में सुधार, शैक्षिक उपलब्धि में सुधार तथा पाठ्य-सामग्री को प्रभावी रूप से समझने में सकारात्मक रूप से योगदान देता है। यद्यपि कुछ विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के उपयोग के बारे में सार्थक जानकारी न होने के कारण उनके शैक्षिक निष्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है अर्थात जब विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के उपयोग के बारे में जागरूकता नहीं होती है, तो वह इनका उपयोग केवल मनोरंजन तथा अपने दोस्तों से अंतर्क्रिया आदि के लिए ही करते हैं, जिससे वे अपने अधिगम से विचलित हो जाते हैं। ऐसे में इन विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यदि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर में वर्णित सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों तथा इनके समुचित उपयोग के बारे में विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों तथा अध्यापकों को सार्थक जानकारी प्रदान की जाए, तो वह इनका उपयोग करके अपने अधिगम को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं, जिससे उनके शैक्षिक निष्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन के परिणामों के आधार पर अग्रलिखित शैक्षिक निहितार्थ हो सकते हैं—

- विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा कक्षा 11 व 12 के लिए वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर में सुझाए गए सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों का उपयोग विज्ञान विषय को जानने व सीखने के लिए किया जा सकता है। इन मंचों पर विज्ञान विषय से संबंधित लिखित, सामग्री, चित्र, ऑडियो तथा वीडियो के रूप में उपलब्ध पाठ्य-सामग्री का उपयोग कर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को रुचिकर, सरल तथा प्रभावी बनाया जा सकता है।
- सोशल मीडिया के माध्यम से उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु विज्ञान विषय से संबंधित विश्व स्तर की शिक्षण-अधिगम सामग्री को निःशुल्क या

न्यूनतम मूल्य पर आसानी से उपलब्ध करवाया जा सकता है, जिससे विद्यार्थियों का विज्ञान विषय के अधिगम पर व्यय होने वाले धन व समय की बचत होगी।

- विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों पर उपस्थित बहु ज्ञानेंद्रिय आधारित अधिगम सामग्री के द्वारा अधिगम हेतु अभिप्रेरित किया जा सकता है।
- ऐसे विद्यार्थी जो किसी कारणवश विद्यालय जाने में असमर्थ हैं, वे सोशल मीडिया के मंचों, जैसे— यू-ट्यूब, टेलीग्राम तथा फेसबुक आदि पर चित्र, ऑडियो, वीडियो तथा लिखित सामग्री का अध्ययन कर सीख सकते हैं।

संदर्भ

ओगुगुओ, बी. सी. और अन्य. 2020. इन्फ्लुएंस ऑफ़ सोशल मीडिया ऑन स्टूडेंट्स अकेडमिक अचीवमेंट. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इवैल्यूएशन एंड रिसर्च इन एजुकेशन*. 9(4). पृष्ठ संख्या 1000–1009.

कुमार, आर., एस. 2020. इफेक्ट ऑफ़ सोशल मीडिया ऑन एकेडमिक परफ़ॉरमेंस ऑफ़ द स्टूडेंट्स. द *ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ डिस्टेंस एंड लर्निंग*. 8 (2).

डाइमरी, पी. 2020. इंपैक्ट ऑफ़ सोशल मीडिया ऑन स्टूडेंट्स: ए कंपेरेटिव स्टडी. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मैनेजमेंट*. 11(11). पृष्ठ संख्या 291–299.

धीमन, बी. 2022. यूज एंड इंपैक्ट ऑफ़ सोशल मीडिया ऑन एकेडमिक परफ़ॉरमेंस ऑफ़ कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स — ए केस स्टडी. *एस.एस.आर.एन. इलेक्ट्रॉनिक जर्नल*. https://www.researchgate.net/publication/363463095.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. *वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर 2019–2020. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. *वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर 2021–2022. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

शंकर, वी. एस., और बी. पुष्पा. 2020. इंपैक्ट ऑफ़ सोशल मीडिया ऑन अकादमिक परफ़ॉरमेंस ऑफ़ यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स – ए फील्ड सर्वे ऑफ़ एकेडमिक डेवलपमेंट. *टेक्नोलर्न— एन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी*. 10(2). पृष्ठ संख्या 01–07.

शर्मा, एस. और आर. बहल. 2022. एनालासिंग द इंपैक्ट ऑफ़ सोशल मीडिया ऑन स्टूडेंट्स अकादमिक परफॉरमेंस— ए कंपेरेटिव स्टडी ऑफ़ एक्स्ट्रावर्शन एंड इंट्रोवर्शन पर्सनालिटी. *साइकालजी स्टडी*. 67(4). पृष्ठ संख्या 549–559.

सेनगुप्ता, एस., और ए. वैश. 2023. ए स्टडी ऑन सोशल मीडिया एंड हायर एजुकेशन डयूरिंग द कोविड-19 पेंडेमिक. *यूनिवर्सल एक्सेस इन द इनफ़ार्मेशन सोसाइटी*. https://doi.org/10.1007/s10209-023-00988-x

सोबेह, और अन्य. 2022. सोशल मीडिया यूज इन ई लर्निंग अमिड कोविड-19 पेंडेमिक— इंडियन स्टूडेंट्स पर्सपेक्टिव. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एन्वायरमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ*. एम.डी.पी.आई. 19.